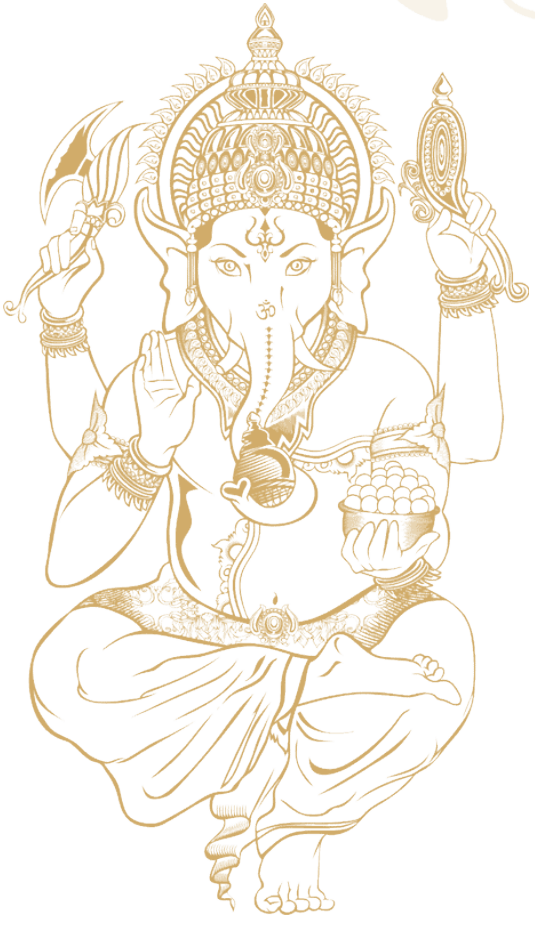

Aayushi sharma

28 Oct 1990

01:44 AM

Jammu

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120820101

तिथि 28/10/1990 **समय** 01:44:00 **वार** रविवार **स्थान** Jammu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:43:57
अक्षांश 32:42:00 उत्तर **रेखांश** 74:52:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:30:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	03:37:10 घं
वेलान्तर	00:16:12 घं
सूर्योदय	06:43:43 घं
सूर्यास्त	17:44:54 घं
चैत्रादि संवत	2047
शक संवत	1912
मास	कार्तिक
पक्ष	शुक्ल
तिथि	9
नक्षत्र	श्रवण
योग	गण्ड
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	वानर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	खो-खोमनी
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	गुरु
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

चन्द्र 1वर्ष 2मा 5दि
गुरु
01/01/2017
01/01/2033

गुरु	19/02/2019
शनि	02/09/2021
बुध	09/12/2023
केतु	13/11/2024
शुक्र	15/07/2027
सूर्य	03/05/2028
चन्द्र	02/09/2029
मंगल	09/08/2030
राहु	01/01/2033

योगिनी

मंगला 0वर्ष 1मा 12दि
मंगला
09/12/2025
10/12/2026

मंगला	20/12/2025
पिंगला	09/01/2026
धान्या	08/02/2026
भ्रामरी	21/03/2026
भद्रिका	11/05/2026
उल्का	11/07/2026
सिद्धा	20/09/2026
संकटा	10/12/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:00:28	सिंह	मघा	2	केतु	राहु	---	0:00			
सूर्य			10:25:18	तुला	स्वाति	2	राहु	गुरु	नीच राशि	0.95	ज्ञाति	पितृ	विपत
चंद्र			21:45:31	मक	श्रवण	4	चंद्र	शुक्र	सम राशि	1.35	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल	व		20:27:56	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	शुक्र	सम राशि	1.31	भ्रातृ	भ्रातृ	जन्म
बुध		अ	14:05:43	तुला	स्वाति	3	राहु	बुध	मित्र राशि	1.10	पुत्र	ज्ञाति	विपत
गुरु			18:06:55	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	बुध	उच्च राशि	1.22	मातृ	धन	साधक
शुक्र		अ	09:12:05	तुला	स्वाति	1	राहु	गुरु	मूलत्रिकोण	1.15	कलत्र	कलत्र	विपत
शनि			25:56:54	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	केतु	सम राशि	1.39	आत्मा	आयु	मित्र
राहु	व		08:49:53	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		08:49:53	कर्क	पुष्य	2	शनि	शुक्र	मित्र राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

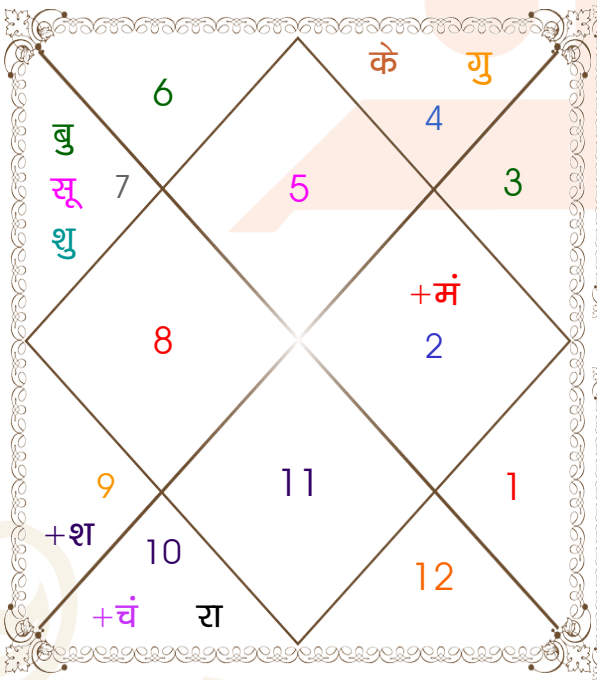

चन्द्र कुंडली

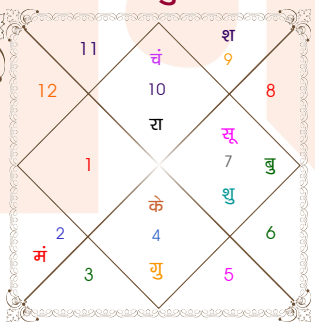

नवमांश कुंडली

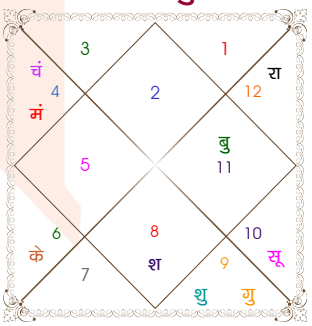

सर्वाष्टकवर्ग

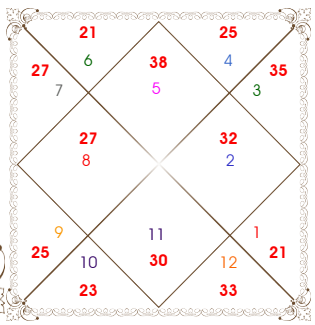

दशमांश कुंडली

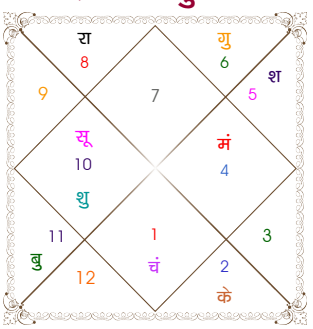

Pt. Shanti parkash jyotish kendra
Talab tillo h. No 37 jammu
7006933918
abishekbakshii@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मकर तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि वानर, गण देव, वर्ण वैश्य, वर्ग मार्जार तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चतुर्थ चरण के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "खो" अक्षर से होगा।

विभिन्न शास्त्रों के ज्ञानार्जन में आप रूचिशील रहेंगी तथा परिश्रम पूर्वक इनका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में सफल होंगी। आपका सामाजिक क्षेत्र विस्तृत रहेगा। अतः आपके मित्रों की संख्या भी अधिक रहेगी तथा इनका आपको जीवन में सुख प्राप्त होता रहेगा। भद्रजनों एवं विद्वान लोगों के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा एवं इनको आप हार्दिक आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगी। आप शत्रुवर्ग को नष्ट करने में प्रायः सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धार्मिक ग्रन्थों तथा पुराणों के श्रवण में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा अपनी इस प्रवृति के पालन के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगी।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्ति विजितारिपक्षः।
प्राणी पुराणश्रवण प्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में सलंग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

देवता तथा ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में अगाध श्रद्धा तथा प्रेम का भाव विद्य मान रहेगा तथा आप इनके प्रति इस भावना का प्रदर्शन करती रहेंगी। धन सम्पति से आप सुसम्पन्न होकर धनाढ्य कहलाएंगी तथा आनन्दपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला भी होंगी तथा अपने परिश्रम तथा योग्यता के बल पर किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी प्राप्त कर सकेंगी। इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होगी। धर्म के प्रति भी आपकी निष्ठा रहेगी तथा समस्त धार्मिक कृत्यों का आप प्रयत्नपूर्वक अनुपालन करेंगी।

श्रावणायां द्विजदेवभक्तिनिरतो राजा धनी धर्मवान।
जातक परिजातः

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज में आप एक गणमान्य महिला होंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप विभिन्न शास्त्रों में भी पारंगत होंगी अतः एक विदुषी के रूप में भी समाज में आपकी ख्याति तथा प्रतिष्ठा रहेगी। आपके मन में दया का भाव स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहेगा। अतः समाज में सभी वर्गो के साथ आप सेवा सहयोग करने के लिए तत्पर

रहेंगी। साथ ही दीन दुःखियों के प्रति भी आपका विशेष सेवा भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आप के पति एक धनाढ्य गुणवान तथा बुद्धिमान पुरूष भी होंगे। अतः आपका सांसारिक जीवन समस्त सुखसंसाधनों से युक्त होकर सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

श्रीमाञ्छ्रवणे श्रुतवानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पंडित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

समाज में अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनके उपकार को स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगी। आपके इस कृतज्ञता के भाव को देखकर अन्य लोग भी आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। आप की शारीरिक सुन्दरता भी दर्शनीय रहेगी तथा अन्य लोगों का इसमें आकर्षण बना रहेगा। आपकी सन्ततियां अधिक संख्या में उत्पन्न होंगी तथा जीवन में सर्वप्रकार के सद्गुणों से सुशोभित होकर आप आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

कृतज्ञः सुभगोदाता गुणैः सर्वैश्च संयुक्तः।
श्रीमान सन्तानबहुलः श्रवणे जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

मकर राशि में पैदा होने के कारण आपके शारीरिक कद की ऊंचाई अधिक होगी तथा मस्तक भी विस्तृत होगा। आपके नेत्र अत्यन्त ही सुन्दरता लिए होंगे तथा शारीरिक सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा। संगीत के प्रति आप प्रारम्भ से ही रूचि शील रहेंगी तथा इसका गहन ज्ञान

प्राप्त करेंगी। शीत से आप को व्याकुलता की अनुभूति होगी तथा इसको सहन करने में आप प्रायः असमर्थ ही रहेगी। सत्य का आप हमेशा नियमपूर्वक अनुपालन करने के लिए यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगी। आप अन्य लोगों को दिखाने के लिए धर्म में रूचि रखेंगी तथा अत्यन्त ही श्रद्धापूर्वक इसका आचरण करने का नाटक करेंगी। समाज में सभी वर्गो के मध्य आप लोकप्रिय तथा सम्माननीया रहेंगी एवं सभी लोग आपको हादिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि भी फैली रहेगी। आप में क्रोध का भाव भी अल्प मात्रा में ही रहेगा। आप किसी के प्रति अपने मन में घृणा तथा वैमनस्य का भाव नहीं रखेंगी अपितु प्रेम तथा स्नेह का ही अधिक भाव रहेगा। अतः इससें अन्य जन आपसे असन्तुष्ट से रहेंगे। आप अपनी आयु से अधिक आयु वाले लोगों के प्रति विशेष आकर्षित रहेंगी तथा उन्हीं से मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध स्थापित भी करेंगी। लेखन कार्य में भी रूचि होने के कारण आप काव्य सृजन के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकेंगी। पूर्ण उत्साह की भावना का आप में प्रायः अभाव ही रहेगा तथा लोलुपता की प्रवृति से युक्त होने के कारण आप कभी कभी अकारण समस्याओं का भी सामना करेंगी।

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोळल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोळतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोळतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने पति तथा पुत्र सहित अपना अधिकांश समय इनके पालन पोषण में ही व्यतीत करेंगी। आपकी कमर भी पतली होगी। आप शीघ्र ही अन्य व्यक्तियों की बातों से सहमत हो जाएंगी तथा उनके कहे अनुसार ही आचरण करने को भी उद्यत रहेंगी। आप में आलस का भाव भी रहेगा अतः आपके अधिकाँश कार्य शनैः शनैः ही सम्पन्न होंगे परन्तु आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी अतः आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वतः ही अल्प परिश्रम द्वारा भाग्यबल से सम्पन्न हो जाएंगे। आपकी घूमने फिरने तथा यात्रा करने में भी रूचि रहेगी एवं अपने अधिकाँश समय को इसी में व्यतीत करेंगी। शारीरिक बल आप में मध्यम ही रहेगा परन्तु आप शौर्य गुणों से युक्त होकर एक साहसी महिला होंगी अतः अगम्य स्थानों एवं कठिन कार्यों को करने की ओर भी आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगी।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोळधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोळलसः।।
शीतालुर्मनुजोळटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोडगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोळघृणः।।
बृहज्जातकम्

आपको परिवार में सामान्य रूप से ही आदर की प्राप्ति होगी परन्तु कुल एवं परिवार की रीति आगे बढाने तथा मर्यादा पालन करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगी तथा इसमें आपका विशेष सहयोग रहेगा। अपने पति को वश में करने में आप पूर्ण सफल

रहेंगी तथा वे समस्त सांसारिक कार्यों को आपके कथनानुसार या निर्देशानुसार ही सम्पन्न करेंगे तथा इस संबंध में स्वतंत्र निर्णय लेने में सर्वथा असमर्थ रहेंगे। सज्जन एवं भद्रपुरूषों द्वारा आपकी नित्य प्रशंसा की जाएगी तथा आप भी इनके पूर्ण मान सम्मान प्रदान करेंगे। माता के प्रति आपके मन में विशेष आदर एवं सम्मान का भाव रहेगा। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में इससे सुखानुभूति प्राप्त करेंगी। भाइयों के प्रति आपका पूर्ण स्नेह रहेगा तथा इनका आप समय समय पर पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। जीवन में आप धन सम्पति से सुसम्पन्न रहकर एक धनाढ्य महिला कहलाएंगी। आप में त्याग की भावना भी रहेगी तथा अवसरानुकूल परिवार या समाज में अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करती रहेंगी। आपका परिवार भी विशाल रहेगा। सुख के प्रति आप विशेष चिन्तित रहेंगी एवं दैनिक सुख संसाधनो की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगी।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

जीवन में आप किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संबंधी की धन सम्पति को प्राप्त करेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक उसका उपभोग भी करेंगी। समाज के सभी वर्गो की भलाई के लिए भी आप चिन्तित रहेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी समस्याओं के समाधान के लिए अपना तन मन धन से सहयोग भी प्रदान करेंगी। इसके साथ ही सलाह देने या मंत्रणा आदि के कार्यों में भी आप निपुण रहेंगी तथा अन्य लोग आपकी इस प्रवृति से समय समय पर लाभान्वित भी होते रहेंगे। भाई बन्धुओं का आप पूर्ण रूप से पालन करेंगे तथा वे भी आपको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आप शौर्य गुणों से सम्पन्न रहेंगी तथा साहस एवं निर्भयता पूर्ण अपना जीवन यापन करेंगी।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

गीतशास्त्र के क्षेत्र में आप निपुणता तथा ख्याति अर्जित करेंगी। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता आपके सौन्दर्य की अभिवृद्धि में सदैव सहायक सिद्ध होगी।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरूषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरूषो भवेत्।।
जातका भरणम्

आप का जन्म देवगण में हुआ हैं। अतः आपकी वाणी मधुर एवं श्रेष्ठता से युक्त

रहेगी। आप की बुद्धि सरल होगी तथा आप अपने विचारों को अन्य जनों के समक्ष सुगमता पूर्वक प्रकट करेंगी। आप को थोड़ी मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही प्रियकर लगेगा। अन्य लोगों के गुणों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा अच्छे बुरे की पहचान भी रहेगी। आप स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा वणित सद्गुणों से सुशोभित रहेंगी। इसके अतिरिक्त विविध प्रकार की धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुख पूर्वक इसका जीवन में उपभोग करेंगी।

आपकी शारीरिक सुन्दरता भी दर्शनीय रहेगी तथा दान शीलता का भाव प्रारम्भ से ही आपके हृदय में रहेगा। अतः दीन दुःखियों तथा जरूरतमन्दों को आप नित्य दान देकर अपनी इस प्रवृति का पालन करेंगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा सादगीपूर्ण ढंग से जीवन यापन करेंगी अनावश्यक भौतिकता की आप यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में एक विदुषी के रूप में भी आप आदरणीया तथा प्रसिद्ध रहेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप में चंचलता की प्रबलता रहेगी तथा आप के अधिकाँश कार्य चपलता से ही सम्पन्न होंगे। आप मिष्ठान प्रिय होंगी तथा मीठे पदार्थो के भक्षण में आपकी विशेष रूचि रहेगी। धन प्राप्त करने के लिए आप अत्यन्त ही लालयित रहेंगी तथा इसे प्राप्त करते समय भी आतुरता का प्रदर्शन करेंगी। आप में काम भावना की अधिकता भी रहेगी तथा आपकी सभी सन्ततियां बुद्धिमान एवं गुणवान होंगी। अन्य जनों से आपका कभी कभी परस्पर कलह या विवाद भी उत्पन्न होता रहेगा। साथ ही शौर्य गुणों से सुसम्पन्न रहकर आप साहस तथा निर्भयता से जीवन व्यतीत करेंगी।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण

कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र वैधृतियोग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा नहीं चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के भी नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, लोहा, पंचधातु, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे अशुभ फलों में कमी होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा आपको सर्वत्र लाभ तथा सफलता भी मिलेंगी। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।